IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सिख धर्म की ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक पृष्ठभूमि का अध्ययन

गुरप्रीत कौर

शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान

डॉ0 महेश चन्द्र

शोध पर्यवेक्षक, सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान

सारांश

सिख धर्म को कालजयी बनाने के लिए गुरु गोविन्द सिंह ने सभी धर्मों और जातियों के लोगों को गुरु–शिष्य–परम्परा में दीक्षित किया। उन्होंने आने वाली शताब्दियों के लिए इस नए मनुष्य का सृजन किया। यह नया मनुष्य जातियों एवं धर्मों में विभक्त न होकर धर्म, मानव एवं देश के संरक्षण के लिए सदैव कटिबद्ध रहने वाला है। सबको साथ लेकर चलने की यह संरचना, निस्संदेह, सिख मानस की थाती है। फिर, सिख धर्म का परम लक्ष्य मानव–कल्याण ही तो है। कदाचित इसी मानव–कल्याण का सबक सिखाने के लिए गुरु गोविन्द सिंह ने औरंगजेब को एक लम्बा पत्र (जफरनामा) लिखा था, जिसमें ईश्वर की स्तुति के साथ–साथ औरंगजेब के शासन–काल में हो रहे अन्याय तथा अत्याचार का मार्मिक उल्लेख है। इस पत्र में नेक कर्म करने और मासूम प्रजा का खून न बहाने की नसीहतें, धर्म एवं ईश्वर की आड़ में मक्कारी और झूठ के लिए चेतावनी तथा योद्धा की तरह मैदान जंग में आकर युद्ध करने के लिए ललकार है। कहा जाता है कि इस पत्र को पढ़कर औरंगजेब की रूँह काँप उठी थी और इसके बाद वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहा। गुरु जी से एक बार भेंट करने की उसकी अन्दरुनी इच्छा भी पूरी न हो सकी।

प्रस्तावना

भारत में सिख पंथ का अपना एक पवित्र एवं अनुपम स्थान है सिखों के प्रथम गुरुए गुरुनानक देव सिख धर्म के प्रवर्तक हैं। गुरु नानक देव जी ने 15वीं शताब्दी में सिख धर्म की नींव रखीए जो ईश्वर की एकताए कर्मशीलताए और मानवता की सेवा पर आधारित है। उन्होंने मूर्तिपूजाए जाति.पाति और अंधविश्वासों का विरोध किया तथा श्एक ओंकारश् का संदेश दिया। उनकी शिक्षाएँ ष्नाम जपनाष्ए ष्कीरत करनाष्ए और ष्वंड छकनाष् सिख धर्म के मूल स्तंभ बने। गुरु नानक जी ने धार्मिक एकता की भावना को बढ़ावा दिया और समाज में व्याप्त भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया। उनके विचारों और कार्यों से सिख धर्म एक स्वतंत्र और मानवीय धर्म के रूप में विकसित हुआ। सिख धर्म की उत्पत्ति भारतवर्ष के मध्यकालीन इतिहास की एक क्रांतिकारी घटना थी। जिसने केवल धार्मिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक स्तर पर भी अपनी गहरी छाप छोड़ी। सिख धर्म का विकास किसी एक धार्मिक प्रवृत्ति या किसी क्रांति का परिणाम नहीं था बल्कि यह उस व्यापक ऐतिहासिक, सामाजिक व धार्मिक परिस्थितियों का परिणाम था, जिन्होंने भारतीय

उपमहाद्वीप विशेषतः उत्तर पश्चिमी भाग भारत को प्रभावित किया। 15वीं शताब्दी में भारत जब खासकर पंजाब क्षेत्र एक उत्कट धार्मिक संतप्त से गुजर रहा था और उस समय (दिल्ली) सल्तनत के उत्तराधिकारी दुष्ट, महत्वाकांक्षी और स्वार्थी शासकों की पराजय ने समाज को पूरी तरह अशांत व असंतुलित कर दिया था। साथ ही धार्मिक कुरीतियाँ, ब्राह्मणवाद, कर्मकांड युक्त व्यवस्था और पाखंडों ने अध्यात्मिकता को ढक लिया था। दूसरी ओर देहली की शासकों द्वारा धार्मिक दमन, नारियों में तेजीफाई, जबरन मतांतरण जैसी घटनाओं ने जनमानस को बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया था और सामाजिक शोषण, नारी उत्पीड़न, जमींदारों की मनमानी, छुआछूत जैसी विघटनकारी समस्याओं के पीडित कर रही थीं। उसी समय भारत की धार्मिक परंपराएँ भी बहुत ही जटिल, विशिष्टतापूर्ण व गहन चिंतन से परिपूर्ण थीं। विदेशी आक्रमणों के चलते सम्मिलन दृष्टि ने विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों व विचारधाराओं का उद्‌भव हुआ, जिन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया। सिख धर्म भारतीय उपमहाद्वीप में उत्पन्न एक प्रमुख धर्म है, जिसकी नींव 15वीं शताब्दी में गुरु नानक देव द्वारा रखी गई थी। यह धर्म सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से उस समय की समस्याओं की मनोवैज्ञानिक, स्वभाव जन्य, एवं भारतीय समाज में व्याप्त भेदभाव, धार्मिक दमन तथा सीमा पर थे।

सिख धर्म को कालजयी बनाने के लिए गुरु गोविन्द सिंह ने सभी धर्मों और जातियों के लोगों को गुरु–शिष्य–परम्परा में दीक्षित किया। उन्होंने आने वाली शताब्दियों के लिए इस नए मनुष्य का सृजन किया। यह नया मनुष्य जातियों एवं धर्मों में विभक्त न होकर धर्म, मानव एवं देश के संरक्षण के लिए सदैव कटिबद्ध रहने वाला है। सबको साथ लेकर चलने की यह संरचना, निस्संदेह, सिख मानस की थाती है। फिर, सिख धर्म का परम लक्ष्य मानव–कल्याण ही तो है। कदाचित इसी मानव–कल्याण का सबक सिखाने के लिए गुरु गोविन्द सिंह ने औरंगजेब को एक लम्बा पत्र (जफरनामा) लिखा था, जिसमें ईश्वर की स्तुति के साथ–साथ औरंगजेब के शासन–काल में हो रहे अन्याय तथा अत्याचार का मार्मिक उल्लेख है। इस पत्र में नेक कर्म करने और मासूम प्रजा का खून न बहाने की नसीहतें, धर्म एवं ईश्वर की आड़ में मक्कारी और झूठ के लिए चेतावनी तथा योद्धा की तरह मैदान जंग में आकर युद्ध करने के लिए ललकार है। कहा जाता है कि इस पत्र को पढ़कर औरंगजेब की रूँह काँप उठी थी और इसके बाद वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहा। गुरु जी से एक बार भेंट करने की उसकी अन्दरुनी इच्छा भी पूरी न हो सकी।

यह कोई श्रेय लेने–देने वाली बात नहीं है कि सिख गुरुओं का सहज, सरल, सादा और स्वाभाविक जीवन जिन मूल्यों पर आधारित था, निश्चय ही उन मूल्यों को उन्होंने परम्परागत भारतीय चेतना से ग्रहण किया था। देश, काल और परिस्थितियों की माँग के अनुसार उन्होंने अपने व्यक्तित्व को ढालकर तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन को गहरे में प्रभावित किया था। सिख गुरुओं ने अपने समय के धर्म और समाज–व्यवस्था को प्रभावित किया था। सिख गुरुओं ने अपने समय के धर्म और समाज–व्यवस्था को एक नई दिशा दी। उन्होंने भक्ति, ज्ञान, उपासना, अध्यात्म एवं दर्शन को एक संकीर्ण दायरे से निकालकर समाज को उस तबके के बीच पहुँचा दिया, जो इससे पूर्णतरू वंचित थे। इससे लोगों का आत्मबोध जागा और उनमें एक नई दृष्टि एवं जागृति पनपी, वे स्वानुभूत अनुभव को मान्यता देने लगे। इस प्रकार निर्गुण निराकार परम शक्ति का प्रवाह प्रखर एवं त्वरित रूप से प्राप्त हुआ। पंजाबी संस्कृति राष्ट्रीयता का मेरुदण्ड है। इसके प्राण में एकत्व है, इसके रक्त में सहानुभूति, सहयोग, करुणा और मानव–प्रेम है। पंजाबी संस्कृति आदमी को आदमी से जोड़ती है और उसकी पहचान बनाती है। विश्व के किसी कोने में घूमता–फिरता पंजाबी स्वयं में से एक लघु पंजाब का प्रतिरूप है। प्रत्येक सिख की अपनी स्वतंत्र चेतना है, जो जीवन–संबंधी समस्याओं को अपने ही प्रकाश में सुलझाने के उद्देश्य से गम्भीर रूप से विचार करती आई है। सिख गुरुओं का इतिहास उठाकर देख लीजिए, उन्होंने

साम्राज्यवादी अवधारणा कतई नहीं बनाई, उल्टे सांस्कृति, क धार्मिक एवं आध्यात्मिक सामंजस्य के माध्यम से मानवतावादी संसार की दृष्टि ही करते रहे। आजादी के पूर्व, भारत–पाक विभाजन एवं इसके बाद कई दशकों में पंजाब में समय–समय पर आए हिंसात्मक–जलजलों एवं निर्दयी विध्वंसों के बावजूद इस धरती के लोगों ने अपना शान्तिपूर्ण अस्तित्व बनाए रखा है। कौंध इनका मार्गदर्शन करती रही है। बल्कि यह सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र में कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह धर्म आध्यात्मवाद, मानवता, समानता व धर्म की निरपेक्ष व्याख्या पर आधारित है। सिख धर्म के विकास हेतु वातावरण में व्याप्त अराजकता, समाज में व्याप्त दूषित परम्पराएँ व नए सामाजिक होने की लहर ने एक नई चेतना, नई दिशा व नए समाज होने की लहर थी। इसी धार्मिक, सामाजिक, धार्मिक कट्टरता व अन्याय ने सिखों आवाज उठाई और एक नई दिशा, नई जागृति का संचालन किया।

सिख धर्म की उत्पत्ति

सिख धर्म का जन्म दक्षिण एशिया के पंजाब क्षेत्र में हुआ था, जो अब भारत और पाकिस्तान के राज्यों में आता है। उस समय इस क्षेत्र के मुख्य धर्म हिंदू धर्म और इस्लाम थे।

सिख धर्म की शुरुआत लगभग 1500 ई. में हुई, जब गुरु नानक ने एक ऐसे धर्म की शिक्षा देना शुरू किया जो हिंदू धर्म और इस्लाम से बिल्कुल अलग था।

नानक के बाद नौ गुरुओं ने सिख धर्म और समुदाय का विकास किया।

पांचवें गुरु, गुरु अर्जन के समय तक सिख धर्म अच्छी तरह से स्थापित हो चुका था।

गुरु अर्जन देव ने सिख जनता की राजधानी के रूप में अमृतसर की स्थापना पूरी की तथा सिख धर्म की पहली अधिकृत पुस्तक, आदि ग्रंथ का संकलन किया।

हालांकि, अर्जन के समय में सिख धर्म को राज्य द्वारा एक खतरे के रूप में देखा गया और अंततः 1606 में गुरु अर्जन को उनके विश्वास के लिए मार दिया गया।

छठे गुरु हरगोबिंद ने समुदाय का सैन्यीकरण शुरू कर दिया ताकि वे किसी भी उत्पीडन का विरोध करने में सक्षम हो सकें। सिखों को अपने विश्वास की रक्षा करने के लिए कई लड़ाइयों लड़नी पड़ीं।

इसके बाद सातवें, मुगल सम्राट औरंगजेब के समय तक राजनीतिक शासकों के साथ अपेक्षाकृत शांति से रहते थे, लेकिन अपनी प्रजा को इस्लाम स्वीकार करने के लिए बल का प्रयोग किया गया था।

औरंगजेब ने नौवें गुरु तेग बहादुर को गिरफ्तार कर लिया और 1675 में उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया।

दसवें गुरु गोविंद सिंह ने 1699 में सिखों को खालसा नामक पुरुषों और महिलाओं के एक सैन्य समूह के रूप में पुनर्गठित किया, जिसका उद्देश्य यह था कि वे सिख धर्म की रक्षा करने में समर्थ रहें।

गोविंद सिंह ने सिख दीक्षा संस्कार (जिसे सिखों दी पहुल कहा जाता है) और 5 क की स्थापना की, जो सिखों को उनका विशिष्ट स्वरूप प्रदान करते हैं। पाँच क (केश, कंघा, कड़ा, कच्छा, कृपाण) सामूहिक पहचान व आत्मसम्मान का प्रतीक।

1799 में रणजीत सिंह ने लाहौर पर कब्जा कर लिया और 1801 में पंजाब को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित किया तथा स्वयं महाराजा बने।

वह एक ऐसे राज्य के शासक बने जिसमें सिखों एवं अन्य सभी धर्मसम्प्रदायों को स्थान प्राप्त था।

पश्चिमी लोग, जैसे डॉक्टर ट्रम्प, फिर भी उन्होंने मुसलमानों और हिंदुओं के साथ भी धार्मिक सहिष्णुता में भाग लिया।

अंग्रेजों से पराजित

संस्कृतिक पृष्ठभूमि

पंजाब की लोक संस्कृति, मकिपरंपरा, लोकगाथा, गुरबाणी की भाषा और संगीत ने सिख धर्म के सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुरबाणी में प्रयुक्त भाषा आम जनमानस के लिए सरल थी, जो पंजाबी, ब्रज, फारसी और संस्कृ त का मिश्रण थी। कीर्तन, सत्संग, कथा व श्रवण की परंपराएँ इस काल में सरलता हुई।

सिख धर्म का जन्म कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि यह तत्कालीन ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की

प्रतिक्रिया स्वरूप एक वैचारिक क्रांति थी। गुरु नानक देव जी और उनके उत्तराधिकारियों ने समाज को नई दिशा दी, जिसमें मानवता, समानता, सेवा. और ईश्वर भक्ति को सर्वोपरि स्थान दिया गया। यह धर्म सिर्फ आध्यात्मिक चेतना नहीं है, बल्कि सामाजिक सुधार राजनीतिक साहस और सांस्कृतिक नवजागरण का वाहक बना।

सिख धर्म का उद्भव और प्रारंभिक स्वरूप

सिख धर्म का उद्भव 15वीं शताब्दी के उत्तरार्दध में हुआ, जब भारतवर्ष राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विचलन, धार्मिक अंधविश्वास और जातिगत भेदभाव से जूझ रहा था। ऐसे समय में गुरु नानक देव जी ने एक नई आध्यात्मिक धारा की शुरुआत की, जो बाद में ''सिख धर्म'' के रूप में विकसित हुई। यह धर्म न केवल धार्मिक आंदोलन बन गया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी वाहक बना।

सिख धर्म का जन्ग उस युग में हुआ जब भारतीय समाज में भयंकर धार्मिक पाखंड, मूर्ति पूजा, और कर्मकांडों का बोलबाला था। हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही समाजों में आम जनता शोषण और भय के वातावरण में जी रही थी। संत कबीर, रैदास, नामदेव जैसे भक्ति आंदोलन के संतों ने इस वातावरण में सुधार की कोशिश की, लेकिन गुरु नानक देव जी ने उसे एक संगठित धर्म के रूप में दिशा दी।

गुरु नानक ने धर्म को केवल एक मत या समुदाय की सीमाओं से ऊपर उठाकर 'धर्म' को मानवता का पर्याय बनाया। उन्होंने सिख शब्द को 'शिष्य के अर्थ में प्रयुक्त किया अर्थात् ईश्वर के मार्ग का सच्चा अनुयायी।

सिख धर्म की प्रारंभिक मान्यताएँ

सिख धर्म के प्रारंभिक स्वरूप की नींव तीन मूल सिद्धांतों पर आधारित थीः

1. नाम सिमरन (ईश्वर का स्मरण) निरंतर 'नाम' का जाप अर्थात् परमात्मा को सच्चे मन से स्मरण करना।

2 करना। कीरत करो (ईमानदारी से कमाना) परिश्रम और ईमानदारी से जीवन यापन

3. बंड छको (बांटकर खाना) समाज में परस्पर सहयोग और सामूहिक जिम्मेदारी का निर्वाह।

4. वंड छको (बांटकर खाना) समाज में परस्पर सहयोग और सामूहिक जिम्मेदारी का निर्वाह।

इन सिद्धांतों ने उस समय के रूढ़िवादी और पाखंडी धार्मिक व्यवहार को चुनौती दी।

गुरु नानक देव जी के बाद सिख धर्म को उनके उत्तराधिकारियों ने व्यवस्थित किया। गुरु अंगद देव जी ने गुरुमुखी लिपि को विकसित कर सिख धर्म की धार्मिक ग्रंथों को लिखित रूप दे दिया। गुरु अमरदास जी ने लंगर प्रथा और प्रचार तंत्र को संगठित किया, जिससे सिख धर्म एक समुदाय के रूप में उभरने लगा।

गुरु रामदास और गुरु अर्जुन देव जी ने धार्मिक स्थलों का निर्माण (जैसे अमृतसर और हरमंदिर साहिब) करवाया और समाज को एक धार्मिक केंद्र से जोड़ा। गुरु अर्जुन देव जी द्वारा ''आदि ग्रंथ'' की रचना सिख धर्म के आध्यात्मिक विकास में मील का पत्थर सिद्ध हुई।

सिख धर्म की विशेषताएं

सिख धर्म की सबसे बड़ी विशेषता इसकी व्यावहारिकता, सामाजिक समरसता और उदार धार्मिक दृष्टिकोण है। यह धर्म न तो हिन्दू धर्म की तरह मूर्ति पूजा को मानता है और न ही इस्लाम की तरह किसी एक रस्म को अंतिम सत्य मानता है। इसमें एकेश्वरवाद है, पर वह ईश्वर निर्गुण और निराकार है।

सिख धर्म का प्रारंभिक स्वरूप 'गुरु' की शिक्षाओं, समाज सेवा, और धर्म के नाम पर इंसानियत की सेवा पर केंद्रित रहा। यही कारण है कि प्रारंभिक सिख समाज कर्तव्य, समर्पण और मानवता के प्रति उत्तरदायी बना।

गुरु परंपरा की अवधारणा

सिख धर्म में ''गुरु'' किसी एक व्यक्ति विशेष का नाम नहीं, बल्कि चेतना, शिक्षाशैली और सक्रिय समाज–सुधार का पर्याय है। 1469 से 1708 तक दस गुरुओं की निरंतर क्रमबद्ध परंपरा ने आध्यात्मिक मार्गदर्शन को शक्तिशाली सामाजिक आंदोलन में रूपांतरित किया। प्रत्येक गुरु ने अपने युग की चुनौतियों के अनुरूप धर्म, संस्कृति और समाज का पुनर्निर्माण किया और यही क्रम सिख समुदाय की विशिष्ट पहचान बना।

निष्कर्ष

इस प्रकार, सिख धर्म का सामाजिक–राजनीतिक स्वरूप स्पष्ट हुआ, जिससे आगे चलकर पंजाब की राजनीतिक सत्ता में उनका महत्व बढ़ाया।

1469 से 1730 तक का काल सिख धर्म के लिए विकास, संघर्ष और सशक्तिकरण का काल था। गुरु नानक देव से लेकर गुरु गोबिंद सिंह तक गुरुओं ने न केवल धार्मिक शिक्षाएं दीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और राजनीतिक जागरूकता के लिए सिखों को प्रेरित किया।

इस अवधि में सिख धर्म ने एक धार्मिक और सामाजिक आंदोलन के रूप में आकार लिया, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास को गहराई से प्रभावित किया।

संदर्भ सूची

1. 'डॉ. हरबंस सिंह' गुरु नानक विचार दर्शन 'प्रकाशन वर्षा' 1975
   गुरु नानक देव के सामाजिक, धार्मिक सुधार और भक्ति आंदोलन में उनके योगदान पर आधारित ।
2. 'भाई वीर सिंह' गुरु नानक चमत्कार, 'प्रकाशन वर्ष 1921
   जनमानस में व्याप्त गुरु नानक की चमत्कारी घटनाओं और उनके ऐतिहासिक पक्ष पर आधारित ।
3. 'डॉ. इंद्रजीत सिंह' गुरु नानक और मध्यकालीन भारत, 'प्रकाशन वर्ष 1998
   गुरु नानक के समय के भारतीय समाज और उनकी विचारधारा का तुलनात्मक विश्लेषण ।
4. 'डॉ. निर्मल कौर' गुरु नानक और सामाजिक सुधार, 'प्रकाशन वर्षा' 2011
   महिलाओं और निम्न वर्गों के हित में गुरु नानक के योगदान पर विशेष दृष्टिकोण।
5. 'डॉ. बलबीर सिंह' वर्ष 1992 गुरु नानक देवः सामाजिक क्रांति के अग्रदूत, 'प्रकाशन
   गुरु नानक की विचारधारा को सामाजिक परिवर्तन की धुरी के रूप में प्रस्तुत करता है।
   'अन्य सिख गुरुओं पर आधारित ऐतिहासिक ग्रंथ'
6. 'डॉ. जसबीर सिंह आहलूवालिया' प्रकाशन वर्षा' 1983 गुरु अंगद से गुरु गोबिंद सिंह तक.
   द्वितीय से दसवें गुरु तक की ऐतिहासिक प्रगति का विश्लेषण।
7. 'डॉ. सतनाम कौर गुरु अमरदास की नारी नीति 'प्रकाशन वर्ष 2004
   सिख परंपरा में महिलाओं की भूमिका और गुरु अमरदास के योगदान पर केंद्रित।
8 'खुशवंत सिंह' सिखों का इतिहास भाग–1, 'प्रकाशन वर्षा' 1963त्र, 1469 से 1839 तक सिख इतिहास का गहन अध्ययनय प्रमाणिक दृष्टिकोण से।
9 1730 तक सिख धर्मा राजनीतिक उत्थान–पतन और सामाजिक संगठन
10 1730 के आसपास सिख समुदाय मुगल अत्याचारों के कारण संघर्षरत था। इस दौर में कई सिख
11 पंथ और मिसल (सैन्य समूह) स्थापित हुए जो पंजाब के विभिन्न हिस्सों में सक्रिय हुए।
12 सिखों ने अपने क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए सैन्य संगठन बनाया।
13 सिखों का सामाजिक संगठन मजबूत हुआ और उन्होंने अपने धर्म और समुदाय की रक्षा के लिए कई लड़ाइयाँ लड़ीं।